Kavya Setu

A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

हरियाणा की साहित्यिक परंपरा और इसके विकास का अध्ययन: हरेराम समीप के *आंधियों के दौर में* तथा राजेश्वर वशिष्ठ के *सुनो वाल्मीकि* के विशेष संदर्भ में

डॉ० जयकरण यादव

शोध-निर्देशक, भाषा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक-124021

Jaikaranyadav00@gmail.com

अमन कुमारी

शोधार्थी, भाषा विभाग, बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर, रोहतक-124021

naveenaman259@gmail.com

सार

हरियाणा भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का एक महत्वपूर्ण केंद्र रहा है। यह प्रदेश केवल ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि साहित्यिक दृष्टि से भी अत्यंत समृद्ध रहा है। वैदिक काल से लेकर आधुनिक युग तक हरियाणा की साहित्यिक परंपरा ने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। इस परंपरा का आधार लोकजीवन, लोकसंस्कृति, धार्मिक चेतना, वीरता, कृषि संस्कृति, सामाजिक यथार्थ तथा मानवीय मूल्यों पर आधारित रहा है। हरियाणा की साहित्यिक धारा में लोकगीत, लोककथाएँ, सांग, रागनी, संत साहित्य, आधुनिक कविता तथा समकालीन विमर्शों का समन्वय मिलता है।

प्रस्तुत शोध-पत्र का उद्देश्य हरियाणा की साहित्यिक परंपरा एवं उसके विकास का अध्ययन करना है। साथ ही हरेराम समीप की काव्य-कृति 'आंधियों के दौर में' तथा राजेश्वर वशिष्ठ की कृति 'सुनो वाल्मीकि' के आधार पर यह स्पष्ट करना है कि आधुनिक हरियाणवी हिन्दी साहित्य किस प्रकार सामाजिक परिवर्तन, लोकतांत्रिक चेतना, दलित विमर्श, मानवीय समानता तथा सांस्कृतिक अस्मिता को अभिव्यक्त करता है। हरेराम समीप की कविता सामाजिक विसंगतियों, राजनीतिक भ्रष्टाचार, जन-संघर्ष तथा मानवीय संवेदनाओं की मुखर अभिव्यक्ति है। दूसरी ओर राजेश्वर वशिष्ठ की *सुनो वाल्मीकि* दलित चेतना, सामाजिक न्याय, आत्मसम्मान तथा ऐतिहासिक पुनर्पाठ का सशक्त दस्तावेज है। दोनों कृतियाँ आधुनिक

हरियाणा के साहित्य को नई दिशा प्रदान करती हैं। यह अध्ययन ऐतिहासिक, विश्लेषणात्मक तथा तुलनात्मक पद्धति पर आधारित है।

कुंजी शब्द- *हरियाणा, साहित्यिक परंपरा, लोक साहित्य, आधुनिक हिन्दी कविता, हरेराम समीप, आंधियों के दौर में, राजेश्वर वशिष्ठ, सुनो वाल्मीकि, दलित विमर्श, सामाजिक चेतना।*

1.भूमिका

भारत की सांस्कृतिक विविधता में हरियाणा का विशिष्ट स्थान है। यह प्रदेश वैदिक संस्कृति की जन्मस्थली माना जाता है। कुरुक्षेत्र, ज्योतिसर, पिहोवा, थानेसर तथा सरस्वती नदी से जुड़ी सांस्कृतिक परंपराएँ इस क्षेत्र को भारतीय ज्ञान परंपरा का केंद्र बनाती हैं। महाभारत और भगवद्गीता का उपदेश भी इसी धरती से जुड़ा माना जाता है। इसलिए हरियाणा का साहित्य केवल क्षेत्रीय न होकर राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना का भी प्रतिनिधित्व करता है।

हरियाणा की साहित्यिक परंपरा का मूल आधार लोकजीवन रहा है। यहाँ के लोकगीत, रागनियाँ, सांग, भजन, लोककथाएँ और लोकनाट्य समाज के जीवन-मूल्यों को अभिव्यक्त करते हैं। ग्रामीण संस्कृति, कृषि-प्रधान जीवन, पारिवारिक संबंध, वीरता, स्त्री-संवेदना तथा धार्मिक विश्वास इस साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ हैं।

मध्यकाल में संत परंपरा ने हरियाणा के साहित्य को नई दिशा दी। संत गरीबदास, नित्यानंद, चरणदास तथा अन्य संत कवियों ने सामाजिक समानता, धार्मिक सहिष्णुता तथा मानवता का संदेश दिया। इनकी रचनाओं में जाति-पाँति और सामाजिक भेदभाव का विरोध मिलता है।

आधुनिक काल में हरियाणा के साहित्य में सामाजिक यथार्थ, लोकतांत्रिक चेतना, किसान जीवन, श्रमिक वर्ग, स्त्री-विमर्श, दलित विमर्श तथा राजनीतिक आलोचना प्रमुख विषय बनकर उभरे। आधुनिक कवियों ने साहित्य को केवल सौंदर्यबोध का माध्यम नहीं माना बल्कि सामाजिक परिवर्तन का उपकरण भी बनाया। हरेराम समीप और राजेश्वर वशिष्ठ इसी आधुनिक साहित्यिक परंपरा के प्रतिनिधि रचनाकार हैं। उनकी कृतियाँ समकालीन समाज की जटिलताओं को अभिव्यक्त करते हुए साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम बनाती हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

2. हरियाणा की साहित्यिक परंपरा: ऐतिहासिक विकास

2.1 वैदिक काल

हरियाणा का इतिहास वैदिक संस्कृति से जुड़ा हुआ है। सरस्वती और दृषद्वती नदियों के मध्य स्थित ब्रह्मावर्त क्षेत्र को वैदिक सभ्यता का केंद्र माना गया है। ऋग्वेद, यजुर्वेद तथा ब्राह्मण ग्रंथों में इस क्षेत्र का उल्लेख मिलता है।

वैदिक ऋषियों ने प्रकृति, मानव जीवन, धर्म, नैतिकता तथा ज्ञान पर आधारित साहित्य की रचना की। यह साहित्य भारतीय चिंतन की आधारशिला बना।

वैदिक साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ—

- प्रकृति का सौंदर्य
- आध्यात्मिक चिंतन
- सामाजिक व्यवस्था
- ज्ञान एवं विज्ञान
- नैतिक मूल्य

इन्हीं विशेषताओं ने आगे चलकर हरियाणा की साहित्यिक परंपरा को गहराई प्रदान की।

2.2 महाभारत एवं पुराणकाल

महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ माना जाता है। श्रीकृष्ण द्वारा अर्जुन को दिया गया भगवद्गीता का उपदेश भारतीय दर्शन का सर्वोच्च ग्रंथ माना जाता है।

इस काल में धर्म, कर्म, नीति तथा मानव कर्तव्य पर आधारित साहित्य विकसित हुआ। इन ग्रंथों का प्रभाव हरियाणा के लोक साहित्य पर भी स्पष्ट दिखाई देता है।

2.3 लोक साहित्य की परंपरा

हरियाणा की वास्तविक साहित्यिक पहचान उसके लोक साहित्य में निहित है।

लोक साहित्य में शामिल हैं—

- लोकगीत

- रागनी
- सांग
- लोककथाएँ
- विवाह गीत
- फाग
- झूमर
- बारहमासा
- वीरगाथाएँ

लोक साहित्य समाज का जीवंत इतिहास है। इसमें किसान जीवन, स्त्री की पीड़ा, पारिवारिक संबंध, लोकविश्वास, ऋतु परिवर्तन तथा सामाजिक परंपराएँ अत्यंत सहज रूप में अभिव्यक्त होती हैं।

हरियाणा की रागनी परंपरा ने हिन्दी साहित्य को नई अभिव्यक्ति दी। इसमें लोकभाषा की सरलता और जीवन का यथार्थ मिलता है।

2.4 संत साहित्य

मध्यकाल में संत साहित्य ने हरियाणा के सामाजिक जीवन को नई दिशा प्रदान की।

संत गरीबदास, नित्यानंद, चरणदास आदि ने मानव समानता का संदेश दिया।

संत साहित्य की प्रमुख विशेषताएँ—

- जाति व्यवस्था का विरोध
- धार्मिक आडंबर का विरोध
- मानवता का समर्थन
- भक्ति और सामाजिक चेतना
- नैतिक जीवन

संत गरीबदास कहते हैं कि मनुष्य की पहचान उसके कर्म से होती है, जन्म से नहीं।

यही विचार आगे चलकर आधुनिक दलित साहित्य की वैचारिक भूमि तैयार करते हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

2.5 आधुनिक साहित्यिक विकास

स्वतंत्रता आंदोलन के बाद हरियाणा में साहित्य का नया दौर प्रारंभ हुआ।

आधुनिक साहित्य के प्रमुख विषय बने—

- लोकतंत्र
- सामाजिक न्याय
- किसान जीवन
- स्त्री विमर्श
- दलित चेतना
- भ्रष्टाचार
- पर्यावरण
- वैश्वीकरण

हरियाणा साहित्य अकादमी की स्थापना के बाद साहित्यिक गतिविधियों को नई गति मिली। अनेक कवियों, कहानीकारों तथा आलोचकों ने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई।

इसी दौर में हरेराम समीप और राजेश्वर वशिष्ठ जैसे रचनाकार सामने आए जिन्होंने सामाजिक यथार्थ को अपनी रचनाओं का केंद्र बनाया।

हरियाणा की साहित्यिक परंपरा की प्रमुख विशेषताएँ

1. लोकजीवन से गहरा संबंध
2. सरल एवं सहज भाषा
3. सामाजिक यथार्थ
4. मानवीय संवेदना
5. राष्ट्रीय चेतना
6. लोकतांत्रिक दृष्टिकोण
7. सामाजिक समानता

8. सांस्कृतिक संरक्षण
9. किसान जीवन का चित्रण
10. लोकभाषा एवं हिन्दी का समन्वय

हरियाणा के आधुनिक साहित्य में नए विमर्श

इक्कीसवीं शताब्दी में हरियाणा का साहित्य अनेक नए विमर्शों से समृद्ध हुआ है।

इनमें प्रमुख हैं—

- दलित विमर्श
- स्त्री विमर्श
- किसान विमर्श
- पर्यावरण विमर्श
- श्रमिक जीवन
- लोकतांत्रिक संघर्ष
- मानवाधिकार
- वैश्वीकरण का प्रभाव

हरेराम समीप तथा राजेश्वर वशिष्ठ की रचनाएँ इन समकालीन विमर्शों का प्रभावशाली प्रतिनिधित्व करती हैं।

3. हरेराम समीप का साहित्यिक व्यक्तित्व एवं काव्य-दृष्टि

3.1 हरेराम समीप: परिचय

हरेराम समीप समकालीन हिन्दी कविता के उन महत्वपूर्ण रचनाकारों में हैं जिन्होंने साहित्य को केवल सौंदर्यबोध का माध्यम न मानकर सामाजिक परिवर्तन का सशक्त उपकरण बनाया। उनकी कविताओं में आम आदमी का जीवन, लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा, सामाजिक असमानता, राजनीतिक विडम्बनाएँ तथा मानवीय संवेदनाएँ प्रमुख रूप से अभिव्यक्त होती हैं। वे जनपक्षधर चेतना के कवि हैं। उनकी रचनाओं में भाषा सहज, संप्रेषणीय और व्यंजना-समृद्ध है, जिसके कारण उनका काव्य व्यापक पाठक-

वर्ग तक पहुँचता है। *आंधियों के दौर में* उनका ऐसा काव्य-संग्रह है जिसमें समकालीन भारतीय समाज की जटिल परिस्थितियों का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। शीर्षक स्वयं संकेत करता है कि कवि ऐसे समय का साक्षी है जहाँ सामाजिक, राजनीतिक और नैतिक मूल्यों पर निरंतर संकट उपस्थित है। इन "आंधियों" के बीच भी मनुष्य की आशा, संघर्ष और मानवीय गरिमा को बचाए रखने का आग्रह इस संग्रह का मूल स्वर है।

3.2 *आंधियों के दौर में*: शीर्षक का निहितार्थ

किसी भी कृति का शीर्षक उसके वैचारिक केंद्र को उद्घाटित करता है। *आंधियों के दौर में* शीर्षक बहुस्तरीय प्रतीकात्मक अर्थ रखता है।

यहाँ "आंधियाँ" केवल प्राकृतिक घटना नहीं हैं, बल्कि—

- सामाजिक विघटन,
- राजनीतिक अस्थिरता,
- नैतिक मूल्यों का क्षरण,
- आर्थिक विषमता,
- सांप्रदायिक तनाव,
- मानवीय संवेदनाओं के ह्रास

की प्रतीक हैं।

इसी प्रकार "दौर" शब्द यह स्पष्ट करता है कि यह कोई क्षणिक स्थिति नहीं, बल्कि पूरे समय की पहचान है। कवि ऐसे युग का चित्र प्रस्तुत करता है जिसमें मनुष्य निरंतर संघर्षरत है, परन्तु वह आशा और प्रतिरोध की चेतना नहीं छोड़ता।

3.3 सामाजिक यथार्थ का चित्रण

इस काव्य-संग्रह की सबसे बड़ी विशेषता इसका सामाजिक यथार्थ है। कवि समाज की वास्तविक समस्याओं से सीधा संवाद करता है। वह किसी कृत्रिम आदर्शवाद की अपेक्षा जीवन की कठोर सच्चाइयों को अभिव्यक्ति देता है।

कविताओं में निम्न सामाजिक समस्याएँ प्रमुख हैं—

- गरीबी
- बेरोज़गारी
- भ्रष्टाचार
- शोषण
- असमानता
- सत्ता का दुरुपयोग
- सामाजिक अन्याय
- लोकतांत्रिक संस्थाओं का संकट

कवि इन समस्याओं का केवल वर्णन नहीं करता, बल्कि उनके कारणों की ओर भी संकेत करता है। उसकी दृष्टि में समाज की विषमताएँ मनुष्य द्वारा निर्मित हैं; अतः उनका समाधान भी मानवीय चेतना और सामूहिक संघर्ष से संभव है।

3.4 जनवादी चेतना

हरेराम समीप की कविता का मूल स्वर जनवादी है। वे साहित्य को जनता के जीवन से जोड़ते हैं। उनकी कविताओं का नायक कोई महापुरुष नहीं, बल्कि सामान्य नागरिक है।

उनके यहाँ—

- किसान,
- मजदूर,
- स्त्री,
- बेरोज़गार युवा,
- हाशिए पर खड़े लोग

काव्य के केंद्र में आते हैं।

कवि सत्ता के वैभव की अपेक्षा श्रम की गरिमा का सम्मान करता है। वह आम आदमी के संघर्ष को इतिहास की वास्तविक शक्ति मानता है।

इस दृष्टि से *आंधियों के दौर में* जनपक्षधर कविता का उत्कृष्ट उदाहरण है।

3.5 लोकतांत्रिक चेतना

समकालीन लोकतंत्र में बढ़ते भ्रष्टाचार, अवसरवाद और नैतिक पतन पर कवि तीखा व्यंग्य करता है।

उसके अनुसार—

- लोकतंत्र केवल चुनाव नहीं,
- बल्कि नागरिक अधिकारों की रक्षा,
- समान अवसर,
- सामाजिक न्याय,
- अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता,
- और मानवीय गरिमा का सम्मान है।

जब ये मूल्य कमजोर होते हैं तब लोकतंत्र का वास्तविक स्वरूप भी संकट में पड़ जाता है।

कवि पाठक को लोकतांत्रिक जिम्मेदारी का बोध कराता है।

3.6 मानवीय संवेदना

हरेराम समीप की कविता में सबसे प्रभावशाली तत्व मानवीय संवेदना है।

वे समाज के कमजोर वर्गों के दुःख को केवल देखते नहीं, बल्कि उसे अनुभव करते हैं।

उनकी कविताओं में—

- भूख,
- अकेलापन,
- विस्थापन,
- पीड़ा,
- संघर्ष,

- आशा

का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है।

इसी कारण उनकी कविता केवल सामाजिक दस्तावेज नहीं, बल्कि संवेदनात्मक साहित्य भी बन जाती है।

3.7 प्रतिरोध की चेतना

आंधियों के दौर में केवल निराशा का साहित्य नहीं है।

कवि अन्याय के विरुद्ध संघर्ष को आवश्यक मानता है।

उसके अनुसार—

यदि समाज में अन्याय है तो उसके विरुद्ध आवाज़ उठाना प्रत्येक नागरिक का दायित्व है।

यह प्रतिरोध हिंसा नहीं बल्कि—

- विचार,
- संवाद,
- लोकतंत्र,
- जनचेतना,
- नैतिक साहस

पर आधारित है।

यही दृष्टिकोण कविता को सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करता है।

3.8 प्रकृति और प्रतीक

हरेराम समीप की कविताओं में प्रकृति का प्रयोग अत्यंत प्रतीकात्मक है।

उदाहरण—

- आंधी — संकट
- दीपक — आशा
- सूरज — परिवर्तन

- अँधेरा — अन्याय
- रास्ता — संघर्ष
- पेड़ — जीवन
- बीज — भविष्य

इन प्रतीकों के माध्यम से कवि जटिल सामाजिक यथार्थ को सरल रूप में प्रस्तुत करता है।

3.9 भाषा और शैली

इस संग्रह की भाषा अत्यंत सरल, प्रभावशाली तथा संप्रेषणीय है।

भाषा की प्रमुख विशेषताएँ—

- सहज हिन्दी
- बोलचाल के शब्द
- लोक-जीवन से जुड़े मुहावरे
- व्यंग्यात्मक अभिव्यक्ति
- प्रतीकात्मक शैली
- बिंबात्मकता
- लाक्षणिक अर्थ

हरेराम समीप कठिन दार्शनिक भाषा की अपेक्षा जनभाषा का प्रयोग करते हैं।

यही कारण है कि उनकी कविता सामान्य पाठक तक आसानी से पहुँचती है।

3.10 बिंब योजना

कवि के बिंब जीवन से जुड़े हुए हैं।

उनके यहाँ—

- खेत,
- धूल,
- सड़क,

- मजदूर,
- पसीना,
- चौराहा,
- झोपड़ी,
- सूरज,
- बादल

जैसे बिंब बार-बार दिखाई देते हैं।

ये बिंब कविता को यथार्थ से जोड़ते हैं।

3.11 समकालीनता

यह संग्रह पूरी तरह समकालीन जीवन का दस्तावेज़ है।

इसमें—

- राजनीतिक संकट,
- आर्थिक असमानता,
- सामाजिक विभाजन,
- नैतिक पतन,
- लोकतंत्र की चुनौतियाँ

का सजीव चित्रण मिलता है।

इसी कारण यह कृति समय के साथ और अधिक प्रासंगिक होती जाती है।

3.12 हरियाणा की साहित्यिक परंपरा में योगदान

यद्यपि हरेराम समीप का साहित्य व्यापक हिन्दी परिप्रेक्ष्य में पढ़ा जाता है, परंतु उनकी जनपक्षधर चेतना, लोकजीवन से जुड़ाव और सामाजिक सरोकार हरियाणा की आधुनिक साहित्यिक परंपरा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं।

उनकी कृतियाँ निम्न कारणों से विशेष महत्त्व रखती हैं—

1. लोकजीवन की अभिव्यक्ति
2. सामाजिक यथार्थ का चित्रण
3. लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना
4. जनवादी कविता का विकास
5. मानवीय संवेदना का विस्तार
6. सामाजिक परिवर्तन की प्रेरणा
7. समकालीन चेतना का विकास
8. साहित्य को समाज से जोड़ना

3.13 आलोचनात्मक मूल्यांकन

आलोचनात्मक दृष्टि से *आंधियों के दौर में* की प्रमुख उपलब्धियाँ हैं—

- सामाजिक प्रतिबद्धता
- वैचारिक स्पष्टता
- जनपक्षधरता
- प्रभावशाली प्रतीक
- सरल भाषा
- संवेदनात्मक गहराई
- लोकतांत्रिक दृष्टिकोण

हालाँकि कुछ आलोचक मानते हैं कि कहीं-कहीं वैचारिक आग्रह के कारण कविता में भावात्मक विस्तार सीमित हो जाता है, फिर भी समग्र रूप से यह संग्रह समकालीन हिन्दी कविता की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

4. हरियाणा की साहित्यिक परंपरा और इसके विकास का अध्ययन: हरेराम समीप के *आंधियों के दौर में* तथा राजेश्वर वशिष्ठ के *सुनो वाल्मीकि* के विशेष संदर्भ में

राजेश्वर वशिष्ठ के *सुनो वाल्मीकि* का साहित्यिक विश्लेषण

4.1 राजेश्वर वशिष्ठ: व्यक्तित्व एवं कृतित्व

राजेश्वर वशिष्ठ समकालीन हिन्दी साहित्य के ऐसे कवि हैं जिनकी रचनाओं में सामाजिक सरोकार, मानवीय संवेदना तथा समानता की चेतना प्रमुख रूप से अभिव्यक्त होती है। उनकी काव्य-दृष्टि समाज के उपेक्षित, वंचित और दलित वर्गों के जीवन-संघर्ष को साहित्य के केंद्र में स्थापित करती है। वे इतिहास, मिथक और वर्तमान सामाजिक यथार्थ के बीच संवाद स्थापित करते हैं। उनकी रचनाएँ केवल काव्यात्मक अभिव्यक्ति नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन की वैचारिक पहल भी हैं।

सुनो वाल्मीकि उनकी ऐसी महत्त्वपूर्ण कृति है जिसमें महर्षि वाल्मीकि के प्रतीक के माध्यम से दलित अस्मिता, सामाजिक न्याय और मानवीय गरिमा के प्रश्नों को नई दृष्टि से प्रस्तुत किया गया है। यह कृति इतिहास के पुनर्पाठ के साथ-साथ समकालीन समाज में समानता और लोकतांत्रिक मूल्यों की स्थापना का आह्वान करती है।

4.2 शीर्षक का औचित्य

सुनो वाल्मीकि शीर्षक अपने आप में संवादधर्मी और प्रतीकात्मक है। यहाँ "वाल्मीकि" केवल *रामायण* के रचयिता महर्षि वाल्मीकि नहीं हैं, बल्कि वे उन सभी उपेक्षित समुदायों का प्रतीक हैं जिन्हें इतिहास में पर्याप्त सम्मान नहीं मिला। "सुनो" शब्द कवि का आह्वान है—एक ऐसी पुकार जो समाज, सत्ता और पाठक सभी से संवाद स्थापित करती है।

यह शीर्षक संकेत करता है कि अब इतिहास के मौन पात्र स्वयं बोल रहे हैं और समाज को उनकी आवाज़ सुननी होगी। इस प्रकार शीर्षक ही कृति की वैचारिक दिशा स्पष्ट कर देता है।

4.3 दलित विमर्श और सामाजिक न्याय

इस कृति का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष दलित विमर्श है। कवि जातिगत भेदभाव, सामाजिक विषमता और ऐतिहासिक अन्याय का आलोचनात्मक विश्लेषण करता है। वह यह स्थापित करता है कि किसी भी लोकतांत्रिक समाज का आधार समानता, न्याय और मानवीय गरिमा है।

कृति में निम्न प्रमुख प्रश्न उठाए गए हैं—

- जातिगत असमानता।

- सामाजिक बहिष्कार।
- श्रम की अवमानना।
- शिक्षा और अवसरों में असमानता।
- सामाजिक सम्मान का प्रश्न।
- संवैधानिक समानता और सामाजिक व्यवहार के बीच का अंतर।

कवि केवल समस्या का चित्रण नहीं करता, बल्कि सामाजिक परिवर्तन और मानवीय समानता की आवश्यकता पर भी बल देता है।

4.4 मिथक का पुनर्पाठ

राजेश्वर वशिष्ठ की काव्य-दृष्टि की सबसे उल्लेखनीय विशेषता मिथकों का आधुनिक पुनर्पाठ है। महर्षि वाल्मीकि को वे केवल धार्मिक या पौराणिक व्यक्तित्व के रूप में नहीं देखते, बल्कि उन्हें ज्ञान, सृजन, श्रम और आत्मसम्मान के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करते हैं।

इस पुनर्पाठ के माध्यम से कवि यह प्रश्न उठाता है कि यदि भारतीय साहित्य की महानतम कृतियों में से एक *रामायण* के रचयिता वाल्मीकि हैं, तो उनके नाम से जुड़े समुदाय को सामाजिक सम्मान से क्यों वंचित रखा गया?

यह प्रश्न पूरी कृति का वैचारिक केंद्र बन जाता है।

4.5 मानवीय गरिमा का प्रश्न

सुनो वाल्मीकि का मूल स्वर मानव गरिमा की स्थापना है। कवि यह मानता है कि प्रत्येक मनुष्य समान अधिकारों और सम्मान का अधिकारी है। जाति, वर्ग, धर्म या आर्थिक स्थिति के आधार पर किसी व्यक्ति का मूल्यांकन लोकतांत्रिक समाज के आदर्शों के विपरीत है। कृति में बार-बार यह आग्रह दिखाई देता है कि सामाजिक परिवर्तन केवल कानूनों से नहीं, बल्कि मानसिकता में परिवर्तन से संभव है।

4.6 सामाजिक यथार्थ

राजेश्वर वशिष्ठ समाज की कठोर वास्तविकताओं से मुँह नहीं मोड़ते। उनकी कविताओं में गाँव, कस्बे और शहर—तीनों स्तरों का यथार्थ उपस्थित है।

वे दिखाते हैं कि आधुनिक विकास के बावजूद—

- सामाजिक भेदभाव,
- आर्थिक विषमता,
- अवसरों की असमानता,
- सांस्कृतिक पूर्वाग्रह

अब भी समाज में विद्यमान हैं।

इसलिए उनकी कविता केवल अतीत की आलोचना नहीं, बल्कि वर्तमान का भी गंभीर विश्लेषण है।

4.7 प्रतिरोध और परिवर्तन की चेतना

कृति में प्रतिरोध का स्वर अत्यंत सशक्त है। यह प्रतिरोध हिंसात्मक नहीं, बल्कि वैचारिक, नैतिक और लोकतांत्रिक है।

कवि मानता है कि—

- शिक्षा,
- साहित्य,
- संवैधानिक अधिकार,
- सामाजिक जागरूकता,
- सांस्कृतिक पुनर्जागरण

के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाया जा सकता है।

इस दृष्टि से *सुनो वाल्मीकि* प्रेरणादायी साहित्य का उदाहरण है।

4.8 भाषा और शैली

राजेश्वर वशिष्ठ की भाषा अत्यंत सहज, प्रभावशाली और संवादधर्मी है। वे कठिन अलंकारिकता की अपेक्षा स्पष्ट और संप्रेषणीय अभिव्यक्ति को महत्व देते हैं।

उनकी भाषा की प्रमुख विशेषताएँ हैं—

- सरल हिन्दी।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

- लोकप्रचलित शब्दावली।
- प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति।
- प्रश्नवाचक शैली।
- व्यंग्यात्मक स्वर।
- भावात्मक तीव्रता।
- संवादात्मक संरचना।

इसी कारण उनकी कविता पाठकों के साथ प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करती है।

4.9 प्रतीक और बिंब

इस कृति में अनेक प्रभावशाली प्रतीकों का प्रयोग हुआ है—

- वाल्मीकि — ज्ञान और आत्मसम्मान का प्रतीक।
- धूल — उपेक्षा।
- दीप — आशा।
- पथ — संघर्ष।
- शब्द — प्रतिरोध।
- प्रकाश — सामाजिक चेतना।
- नदी — निरंतर परिवर्तन।

ये प्रतीक कविता को वैचारिक गहराई प्रदान करते हैं।

4.10 समकालीन प्रासंगिकता

आज जब भारतीय समाज सामाजिक समानता, लोकतांत्रिक अधिकारों और समावेशी विकास की दिशा में आगे बढ़ रहा है, तब *सुनो वाल्मीकि* जैसी कृतियाँ अत्यंत प्रासंगिक हो जाती हैं। यह कृति हमें याद दिलाती है कि वास्तविक प्रगति तभी संभव है जब समाज का प्रत्येक वर्ग सम्मानपूर्वक जीवन जी सके।

4.11 हरियाणा की साहित्यिक परंपरा में योगदान

हरियाणा की आधुनिक साहित्यिक परंपरा में *सुनो वाल्मीकि* का विशेष महत्व है क्योंकि—

1. इसने दलित विमर्श को सशक्त स्वर दिया।
2. सामाजिक समानता के विचार को साहित्य का केंद्र बनाया।
3. इतिहास के पुनर्पाठ की नई दृष्टि प्रस्तुत की।
4. मानवीय गरिमा को साहित्यिक मूल्य बनाया।
5. लोकतांत्रिक चेतना को मजबूत किया।
6. साहित्य को सामाजिक परिवर्तन के आंदोलन से जोड़ा।
7. आधुनिक हरियाणवी हिन्दी साहित्य को राष्ट्रीय विमर्श से जोड़ा।

4.12 आलोचनात्मक मूल्यांकन

आलोचकों के अनुसार *सुनो वाल्मीकि* की सबसे बड़ी उपलब्धि इसकी वैचारिक स्पष्टता और सामाजिक प्रतिबद्धता है। यह कृति दलित विमर्श को केवल विरोध की भाषा तक सीमित नहीं रखती, बल्कि संवाद, समावेशन और मानवीय मूल्यों की स्थापना का मार्ग भी सुझाती है।

यद्यपि कुछ स्थानों पर वैचारिक आग्रह काव्यात्मक विस्तार पर प्रभाव डालता प्रतीत होता है, फिर भी समग्र रूप से यह समकालीन हिन्दी कविता की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।

5. हरेराम समीप के *आंधियों के दौर में* तथा राजेश्वर वशिष्ठ के *सुनो वाल्मीकि* का तुलनात्मक अध्ययन

5.1 प्रस्तावना

समकालीन हिन्दी कविता में सामाजिक सरोकारों, लोकतांत्रिक मूल्यों तथा मानवीय संवेदनाओं को केंद्र में रखने वाले कवियों में हरेराम समीप और राजेश्वर वशिष्ठ का विशेष स्थान है। दोनों रचनाकारों ने अपने-अपने काव्य-संग्रहों के माध्यम से आधुनिक भारतीय समाज की चुनौतियों को अभिव्यक्त किया है। यद्यपि दोनों की विषय-वस्तु और अभिव्यक्ति की शैली में कुछ भिन्नताएँ हैं, तथापि उनका मूल उद्देश्य मनुष्य की गरिमा, सामाजिक समानता और न्यायपूर्ण समाज की स्थापना है।

5.2 विषय-वस्तु की समानताएँ

दोनों कृतियों में निम्न समानताएँ स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं—

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

(क) सामाजिक यथार्थ

दोनों कवि समाज की वास्तविक समस्याओं को केंद्र में रखते हैं। *आंधियों के दौर में* राजनीतिक, आर्थिक और नैतिक संकटों का चित्रण करती है, जबकि *सुनो वाल्मीकि* जातिगत असमानता और सामाजिक अन्याय पर केंद्रित है।

(ख) जनपक्षधरता

दोनों रचनाकार सामान्य जन को अपनी कविता का नायक बनाते हैं। किसान, मजदूर, दलित, श्रमिक और उपेक्षित वर्ग उनकी रचनाओं के केंद्र में हैं।

(ग) लोकतांत्रिक चेतना

दोनों कृतियाँ लोकतंत्र को केवल शासन प्रणाली नहीं, बल्कि सामाजिक समानता और मानवीय सम्मान का आधार मानती हैं।

(घ) परिवर्तन की आकांक्षा

दोनों कवियों का उद्देश्य केवल समस्याओं का चित्रण करना नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक परिवर्तन की प्रेरणा देना भी है।

5.3 विषय-वस्तु की भिन्नताएँ

आंधियों के दौर में	सुनो वाल्मीकि
व्यापक सामाजिक एवं राजनीतिक यथार्थ	दलित विमर्श और सामाजिक न्याय
लोकतंत्र की चुनौतियाँ	जातिगत असमानता
जनवादी चेतना	दलित अस्मिता
सामाजिक संघर्ष	ऐतिहासिक पुनर्पाठ
सामूहिक प्रतिरोध	आत्मसम्मान और पहचान

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

5.4 भाषा एवं शैली की तुलना

हरेराम समीप की भाषा सीधे जनजीवन से जुड़ी हुई है। उनकी शैली में व्यंग्य, प्रतीक और सामाजिक टिप्पणी का प्रभाव दिखाई देता है। राजेश्वर वशिष्ठ की भाषा अधिक संवादात्मक, भावात्मक और प्रतीकात्मक है। वे मिथकों और ऐतिहासिक संकेतों का प्रभावी प्रयोग करते हैं।

दोनों की भाषा सरल, संप्रेषणीय तथा विचारोत्तेजक है।

5.5 प्रतीक योजना की तुलना

हरेराम समीप—

- आंधी
- सूरज
- अँधेरा
- दीपक
- रास्ता
- खेत

राजेश्वर वशिष्ठ—

- वाल्मीकि
- धूल
- प्रकाश
- शब्द
- नदी
- यात्रा

दोनों कवि प्रतीकों के माध्यम से सामाजिक यथार्थ को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं।

5.6 हरियाणा की साहित्यिक परंपरा में योगदान

दोनों कृतियाँ हरियाणा के आधुनिक साहित्य को निम्न प्रकार समृद्ध करती हैं—

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 7.2 ISSN No: 3049-4176

1. सामाजिक चेतना का विकास

इन कृतियों ने साहित्य को समाज के वास्तविक प्रश्नों से जोड़ा।

2. लोकतांत्रिक मूल्यों का विस्तार

दोनों रचनाकार समानता, स्वतंत्रता और न्याय के पक्षधर हैं।

3. लोकजीवन की अभिव्यक्ति

इनकी कविताओं में सामान्य जन का जीवन प्रमुखता से चित्रित हुआ है।

4. आधुनिक विमर्शों का विकास

दलित विमर्श, जनवादी चेतना और सामाजिक न्याय जैसे विषयों को नई दिशा मिली।

5. साहित्य की सामाजिक भूमिका

दोनों कवियों ने यह सिद्ध किया कि साहित्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन का माध्यम भी है।

6. हरियाणा की साहित्यिक परंपरा और उसके विकास का समग्र मूल्यांकन

हरियाणा की साहित्यिक परंपरा अत्यंत प्राचीन और समृद्ध रही है। वैदिक साहित्य से प्रारंभ होकर यह परंपरा लोकसाहित्य, संत साहित्य, आधुनिक हिन्दी साहित्य तथा समकालीन विमर्शों तक विकसित हुई है।

इस विकास यात्रा में निम्न प्रमुख चरण रहे—

- वैदिक साहित्य
- महाभारत एवं गीता परंपरा
- लोकगीत एवं रागनी
- सांग साहित्य
- संत साहित्य
- आधुनिक हिन्दी साहित्य
- दलित विमर्श

- स्त्री विमर्श
- जनवादी साहित्य
- समकालीन सामाजिक कविता

हरेराम समीप और राजेश्वर वशिष्ठ की कृतियाँ इसी विकास यात्रा की आधुनिक कड़ियाँ हैं।

इन दोनों कवियों ने हरियाणा की साहित्यिक परंपरा को केवल सांस्कृतिक पहचान तक सीमित नहीं रखा बल्कि उसे सामाजिक न्याय, लोकतंत्र और मानवीय समानता की दिशा में विस्तारित किया।

उपसंहार

हरियाणा की साहित्यिक परंपरा भारतीय साहित्य की समृद्ध परंपरा का अभिन्न अंग है। इसकी विशेषता यह है कि यहाँ साहित्य हमेशा समाज के साथ चलता रहा है। लोकगीतों से लेकर आधुनिक कविता तक हर युग में साहित्य ने समाज के सुख-दुःख, संघर्ष और सांस्कृतिक मूल्यों को अभिव्यक्ति दी है।

हरेराम समीप की *आंधियों के दौर में* समकालीन समाज की राजनीतिक और सामाजिक विसंगतियों का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करती है। वहीं राजेश्वर वशिष्ठ की *सुनो वाल्मीकि* सामाजिक न्याय, दलित अस्मिता और मानवीय गरिमा की स्थापना का सशक्त घोष है।

दोनों कृतियाँ मिलकर यह प्रमाणित करती हैं कि आधुनिक हरियाणा का साहित्य केवल क्षेत्रीय नहीं, बल्कि राष्ट्रीय सामाजिक चेतना का प्रतिनिधि साहित्य है। इनकी रचनाएँ पाठकों को केवल संवेदनशील नहीं बनातीं, बल्कि सामाजिक परिवर्तन के प्रति उत्तरदायी भी बनाती हैं।

शोध-निष्कर्ष

इस अध्ययन से निम्न निष्कर्ष प्राप्त होते हैं—

हरियाणा की साहित्यिक परंपरा वैदिक काल से निरंतर विकसित होती रही है। लोकसाहित्य इस परंपरा का सबसे सशक्त आधार है। आधुनिक हरियाणा का साहित्य सामाजिक यथार्थ पर केंद्रित है। *आंधियों के दौर में* जनवादी चेतना की प्रतिनिधि कृति है। *सुनो वाल्मीकि* दलित विमर्श की महत्त्वपूर्ण कृति है। दोनों रचनाकार साहित्य को सामाजिक परिवर्तन का माध्यम मानते हैं। दोनों कृतियों में लोकतांत्रिक मूल्यों की स्पष्ट स्थापना होती है। दोनों कवियों की भाषा सरल, प्रभावशाली और जनोन्मुख है। हरियाणा की

साहित्यिक परंपरा आधुनिक विमर्शों के कारण अधिक व्यापक और समकालीन बनी है। भविष्य में हरियाणा के साहित्य पर क्षेत्रीय, स्त्रीवादी, पर्यावरणीय तथा दलित विमर्श के संदर्भ में और अधिक शोध की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची

1. समीप, हरेराम। *आंधियों के दौर में*। नई दिल्ली: प्रकाशक, संस्करणानुसार।
2. वशिष्ठ, राजेश्वर। *सुनो वाल्मीकि*। नई दिल्ली: प्रकाशक, संस्करणानुसार।
3. शुक्ल, आचार्य रामचन्द्र। *हिन्दी साहित्य का इतिहास*। नागरी प्रचारिणी सभा।
4. द्विवेदी, हजारी प्रसाद। *हिन्दी साहित्य की भूमिका*।
5. नामवर सिंह। *कविता के नए प्रतिमान*।
6. बच्चन सिंह। *आधुनिक हिन्दी साहित्य का इतिहास*।
7. नगेन्द्र। *हिन्दी साहित्य का इतिहास*।
8. हरियाणा साहित्य अकादमी। *हरियाणा का हिन्दी साहित्य*।
9. सत्यकेतु विद्यालंकार। *भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास*।
10. रामविलास शर्मा। *भारतीय साहित्य की भूमिका*।
11. ओमप्रकाश वाल्मीकि। *दलित साहित्य का सौंदर्यशास्त्र*।
12. कंवल भारती। *दलित विमर्श की भूमिका*।